आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2639 • उदयपुर, गुरुवार 17 मार्च, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर की ओर से प्रेम के पर्व होली की शुभकामनाएं

गंगाखेड जिला परभणी में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 1 मार्च 2022 को पूजा मंगल कार्यालय, गंगाखेड में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता भोलाराम कांकरिया ट्रस्ट रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 73, कृत्रिम अंग वितरण 48, कैलिपर वितरण 39 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती आंचल जी गोयल (जिला कलक्टर महोदया, परभणी), अध्यक्षता श्रीमान घनश्यामजी मालपाणी (अध्यक्ष, महेश बैंक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान सुधीर जी पाटील (उपविभागीय अधिकारी), श्रीमान गोविंद यरमे (तहसीलदार), श्रीमती मंजू जी दर्डा (शाखा संयोजिका) रहे।

श्री किशन जी (प्रोस्थोटीक एवं ऑर्थोटीस्ट इंजीनियर), शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री बजरंग जी, श्री गोपाल जी गोस्वामी (सहायक), श्री प्रवीण जी (फोटोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

कैथल (हरियाणा) में दिव्यांग सेवा

ननारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 26–27 फरवरी 2022 को आर.के.एस.डी.कॉलेज अम्बाला रोड, कैथल में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता नारायण सेवा संस्थान भााखा कैथल रही। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 185, कृत्रिम अंग माप 163, कैलिपर्स वितरण 77 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् साकेत जी मंगल (एडवोकेट एवं चैयरमेन आर.के.एस.डी. ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन), अध्यक्षता श्रीमान मनोज कुमार जी (अर्जुन अवार्डी बॉक्सर), विशिष्ट अतिथि श्रीमान राजेश कुमार जी (कोच), श्रीमान पंकज जी बंसल (सचिव आर.के.एस.डी कॉलेज), श्रीमान एल.एम. बिंदलिश जी (समाजसेवी), डॉ.विवेक जी गर्ग (शाखा संयोजक नारायण सेवा संस्थान शाखा, कैथल), श्री सतपाल जी मंगला (संरक्षक नारायण सेवा संस्थान शाखा, कैथल), डॉ. बी.डी. गुप्ता जी, डॉ. नलिन जी शर्मा, श्री अनिल जी गोयल, श्रीमती गुरुप्रीत जी कौर (इनर व्हील क्लब चैयरमेन) रहे।

श्री गौरव जी (प्रोस्थोटीक एवं ऑर्थोटीस्ट इंजिनियर), श्री नाथूसिंह जी, श्री नरेश जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी, श्री बहादुर सिंह जी मीणा, श्री सत्यनारायण जी मीणा (सहायक), श्री अनिल जी (विडियोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
SINCE 1985

स्नेह मिलन समारोह
दिनांक व स्थान
समय : सायं 4.00 बजे से

20 मार्च 2022 : होटल जयपुर हेरिटेज, बद्रीनारायण मंदिर के पीछे, आमेर रोड़, जयपुर, राज.
20 मार्च 2022 : प्रशान्ति विद्या मंदिर, महावीर नगर 2, खण्डेलवाल नर्सिंग होम के पीछे, कोटा, राज.
20 मार्च 2022 : बी राधिका भवन, राम वाटिका सोसाईटी, स्वामी नारायण नगर, बडोदा, गुजरात

इसस्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

खुशी कैसे पायें

आश्रम में एक छात्र ने पूछा, 'गुरुवर क्या आसानी से खुशी पायी जा सकती है?'गुरुजी ने मुसकरा कर कहा, 'तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मैं कल सुबह सभी विद्यार्थियों के समक्ष दूंगा।

दूसरे दिन सभी छात्र जब आ गये तो गुरुजी ने कहा, 'आज हम एक खेल खेलेंगे। बायीं तरफ स्थित कक्ष में कुछ पतंगें रखी हैं। उन पर आपके नाम लिखे हैं आपको उस कक्ष में जाकर अपने नाम की पतंग लानी है और इस प्रांगण में आकर उड़ाना है.।

सभी छात्र कमरे में अपने नाम की पतंग को तलाशने में जुट गये। अफरातफरी में कोई भी अपनी पतंग को साबित नहीं ला पाया। छीना–झपटी में पतंगें फट गयीं। गुरुजी ने कहा, 'सभी अपनी नाकामी को भूलकर दायीं ओर स्थित कक्ष में जायें वहां भी आपके नाम लिखी पतंगें हैं।

आपको किसी की भी पतंग लाकर उड़ानी है। सभी कुछ ही क्षणों में पतंगें लेकर प्रांगण में आ गये और खुशी से पतंग उड़ाने लगे। तब गुरुजी ने उस शिष्य को कहा, 'वत्स हम खुशी की तलाश इधर–उधर करते हैं हमारी खुशी दूसरों की खुशी में होती है।

विनम्रता–कठोरता

महाभारत का प्रसंग है। धर्मयुद्ध अपने अंतिम चरण में था। भीष्म पितामह शैय्या पर लेटे जीवन की अंतिम घड़ियां गिन रहे थे। धर्मराज युधिष्ठिर जानते थे कि पितामह उच्च कोटि के ज्ञान और जीवन संबंधी अनुभव से संपन्न हैं। वे अपने भाइयों और पत्नी सहित उनके समक्ष पहुंचे और उनसे विनती की, 'पितामह, आप विदा की इस बेला में हमें जीवन के लिए उपयोगी ऐसी शिक्षा दें, जो सदैव हमारा मार्गदर्शन करें।' भीष्म ने बड़ा ही उपयोगी जीवन दर्शन समझाया और नदी और समुद्र के संवाद की कथा सुनाई। नदी जब समुद्र तक पहुंचती है, तो अपने जल के प्रवाह के साथ बड़े–बड़े वृक्षों को भी बहाकर ले आती है। एक दिन समुद्र ने नदी से प्रश्न किया कि तुम्हारा जलप्रवाह इतना शक्तिशाली है कि उसमें बड़े–बड़े वृक्ष भी बहकर आ जाते हैं पर कभी कोमल घास या बेलें नहीं आती।

नदी का उत्तर था जब मेरे जल का बहाव तेज और प्रलयंकारी होता है, तब बेलें और घास झुक जाती हैं और मुझे मार्ग दे देती हैं, किंतु वृक्ष कठोरता के कारण यह नहीं पर पाते इसलिए मेरा प्रवाह उन्हें बहा ले आता है।

जीवन में सदैव विनम्र रहें तभी व्यक्ति का अस्तित्व बना रहता है। पांडवों ने भीष्म के उपदेश को ध्यान से सुनकर अपने आचरण में उतारा।

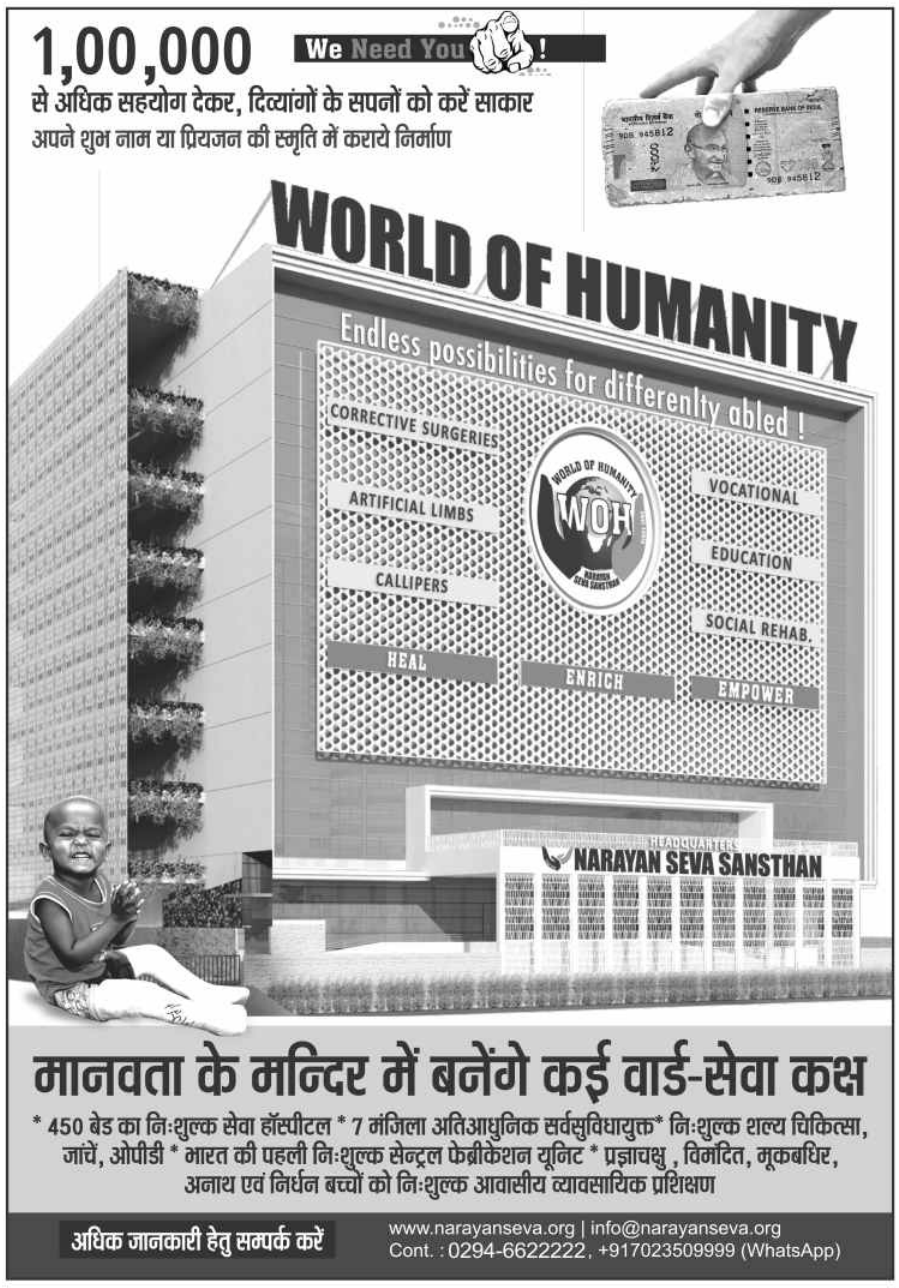

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

रात्रिकाल होने लगा। सीताजी ने सोचा– मुझे तो वहीं लौट जाना चाहिये जहाँ मेरे पतिदेव है। सुनयनाजी समझ गयी। बहुत शिक्षा दी। राम भगवान ने भरत को कहा–प्रजा को अपने माता–पिता मानना, प्रजा को सब कुछ मानना। पर कैकेयी ने जब बार–बार कहा –

लौट चलो घर भैया
अपराधिन हूँ तात तुम्हारी मैया।

तो भगवान श्रीराम ने कहा– जाने दो निर्णय करे भरत ही सारा। माँ मैंने कहा–पिताजी का पहले वो वचन हो जिनके लिये कि प्राण उन्होंने त्यागे। मैं भी अपना व्रत निभाऊँ आगे। मैं चाहता तो हूँ कि, मैं चौदह साल वनवास में रहूँ। पिताजी चले गये। राम राम राम कहि राम। मेरा स्मरण करते हुए पिताजी चले गये। माँ मुझे अपना वचन पूरा करने दो माँ। लेकिन फिर भी कोई बात नहीं।

मेरी–इनकी चिर पंच
रहीं तुम माता।
हम दोनों के मध्यस्थ
आज ये भ्राता।

भरतजी अपने मन में दुःखों की इतनी गठरी रख के गये थे। सोचा था कैसे भी होगा– मैं रामजी को मना लूंगा लेकिन जब रामजी ने उन पर भार रख दिया। उन्होंने कहा– इन पावड़ियों पे अपने चरण रख दीजिये। राज्य मैं नहीं करूगाँ, राम राज्य मैं नहीं करूंगा। लेकिन यदि आप नहीं लौटते है तो आपकी चरण पादुकाओं को माथे पे धारण करके लौट जाऊगाँ और नंदीग्राम में रहूंगा में।

धूप–छाँव के ऊलट फेर में,
हम सबका शक्ति परीक्षण हैं।
परिवर्तन से क्या घबराना,
परिवर्तन ही जीवन हैं।।

सफलता के कदम

हिमांशु और सचिव दोनों भाई है। उम्र क्रमशः 10 एवं 11 वर्ष है। इनके पिता श्री राजेन्द्र कुमार पालम गांव – दिल्ली के निवासी है। दोनों को ही जन्म के एक वर्ष की अवधि में ही पैरों में पोलियो हो गया। खड़ा होना व चलना असंभव हो गया।

दिल्ली में इलाज भी करवाया पर कोई लाभ नहीं हुआ। टी.वी. पर संस्थान का प्रसारण देखकर पहले सचिन को यहां लाकर दिखाया। इसी तरह हिमांशु की जांच करवाई और ऑपरेशन के बाद दोनों बच्चों के पैर ठीक हो गये हैं। सचिन तो पूरी तरह दिव्यांगता मुक्त होकर चलने–फिरने में सशक्त हो गया है और हिमाशु का पैर भी सीधा हो गया है, पैर में पर्याप्त शक्ति संचार होने से खड़ा होकर चलने–फिरने लगा है। आशा है, शीघ्र ही वह भी पूर्ण रूप से दिव्यांगता मुक्त हो जायेगा। संस्थान में उपलब्ध निःशुल्क चिकित्सा सुविधा से दोनों भाईयों का जीवन तकलीफों से मुक्त हो गया है और उनका भविष्य सुधर गया हैं। श्री शैलेन्द्र कुमार संस्थान के चिकित्सा कर्मियों, साधकों एवं सभी कर्मचारियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं और दानदाताओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए संस्थान की प्रगति की कामना करते हैं।

सम्पादकीय

होली का त्योहार भारतीय जनजीवन में उमंग, उल्लास व उत्साह का अभिवर्द्धन करने वाला महापर्व है। भौगोलिक दृष्टि, प्राकृतिक दृष्टि, सामाजिक दृष्टि व धार्मिक दृष्टि से इस त्यौहार के अपने–अपने महत्व हैं। भारत के कुछ क्षेत्रों में इसे स्वास्थ्य से भी जोड़ा गया है। नवजात संतानों को एक वर्ष के भीतर की अवधि में होली दहन के समय परिक्रमा कराकर उसके भावी जीवन को नीरोगी बनाने का उपक्रम किया जाता है। फसलों की कटाई व धान की प्राप्ति से हुई प्रसन्नता में नर्तन करना कई स्थानों पर प्रचलित है। इसके बाद ही रंगों का पर्व प्रारंभ होता है। वातावरण स्वतः हलका–फुलका व हास्यमय हो उठता है। प्रेम और प्रीति को बढ़ाने के लिये भी यह त्योहार महत्त्वपूर्ण है।

इस पर्व के साथ ऋतु परिवर्तन का आयाम भी जुड़ा हुआ होने से ठंडा भोजन तथा खट्टे पदार्थों का सेवन प्रारंभ करके शरीर का अनुकूलन भी इसी पर्व से प्रारंभ होता है।

होली भक्ति की जीत, अंहकार की हार तथा भाईचारे के विस्तार का जीवंत पर्व है। इस अवसर पर सभी को आत्मीय शुभकामनायें।

कुछ काव्यमय

होली के हुड़दंग में,
गम का क्या है काम।
जीवन का उल्लास ही,
खुशियों का पैगाम।।
रंगबिरंगा पर्व है,
प्रीति का त्योहार।
खाना–पीना–खेलना,
बाँट–बाँट कर प्यार।।

सेवा से पीड़ा मुक्ति

हरिद्वार से आगे ऋषिकेश और गंगाजी के उस पार स्वर्गाश्रम– वट वृक्ष के नीचे श्रद्धेय स्वामी जी श्री रामसुख दास जी महाराज के श्री मुख से प्रवचनामृत का रसपान कर रहे थे –हजारों भक्त। "देखो, सबसे सार की बात बता रहा हूँ– सच्चा सार –ध्यान से सुनना –सेवा और सेवा –प्राणि मात्र की सेवा....."

एक हाथ खड़ा हुआ– श्री महाराज जी तो शंका पूछने के लिये बार–बार कहते ही रहते है –

तुरन्त बोले "हाँ हाँ पूछो ...

"महाराज, मैं तो बीमार रहने लग गई, शरीर काम का रहा नहीं, आप सेवा की कह रहे हैं, परन्तु करें कैसे? मन में तो बहुत आता है लेकिन....." कहते–कहते बुढ़िया माई के चेहरे पर झलक आये

गहरे विवशता व मजबूरी के भाव। श्री महाराज जी मधुर वाणी में बोले "देखो, आपका शरीर ही बीमार हुआ है–मन नहीं। प्रति क्षण मन से सेवा की भावना फैलाओ चारों तरफ। प्रभु से प्रार्थना करो– हे दीन–बन्धु, वह मगना बहुत बीमार है– बड़ा कष्ट है उसे, प्रभु उसे ठीक कर दो..... हे कृपालु– हे दीना नाथ....। इसी प्रकार जहां भी सेवा हो रही है उसकी अनुमोदना करो–उत्साह बढ़ाओ और फैलाती रहो सेवा के अणुओं को चारों तरफ सभी दिशाओं में।"

स्थूल से 'सूक्ष्म' ज्यादा प्रभावशाली है और सूक्ष्म से अधिक चमत्कारिक 'कारण'। जिसने "जगत" को जाना है–वही जान पाएगा "जगदीश" को। सूर्य की किरणें अलग से अपना अस्तित्व नहीं रखती, वे प्रकाशित है सूर्य की ही उष्मा से परन्तु किरणों से हम समझ पाते हैं भास्कर को–सविता देवता को। आइये, जगदीश को जानने के लिये जगत् के हर जीव में झाँकने की कोशिश करें ओर बार–बार कहें मन से–अरे मन? जब खम्भे से नृसिंह भगवान प्रकट हो सकते हैं तो यह जो दुःखी है, यह जो बीमार है उसमें भी तो वही जगदीश है.....

– कैलाश 'मानव'

अनवरत प्रयास

सफल व्यक्तियों में अनवरत प्रयास का असाधारण गुण होता है। वे मैदान छोड़ने से इंकार कर देते हैं, चाहे परिस्थितियाँ कितनी ही प्रतिकूल क्यों न हों? जीवन की डगर हो या व्यापार, पढ़ाई हो या खेल, एक ही गुण पूरी सफलता की गारण्टी देता है और वह है कभी हार न मानने की दृढ़ इच्छाशक्ति अर्थात् अनवरत प्रयास का गुण। अब्राहम लिंकन अनेक राष्ट्रपति पद पर चुनाव हारे, लेकिन अंतिम वीं बार के प्रयास में वे अमेरिका के राष्ट्रपति बन ही गए।

एक वैज्ञानिक ने एक अनूठा प्रयोग किया। उसने पानी का बड़ा–सा टैंक बनवाया। उस टैंक को पानी से पूरा भरवाया। इसके उपरान्त उसमें एक बड़ी–सी शार्क मछली

छोड़ी। शार्क मछली के साथ अन्य छोटी–छोटी मछलियाँ भी डाली गईं। चूंकि शार्क मछली भूखी थी, अतः उसने अपने चारों ओर उपस्थित समस्त मछलियों को एक–एक करके खा लिया। जब शार्क ने सभी मछलियों को खा लिया तो फिर वैज्ञानिक ने उस टैंक के बीच में एक अत्यन्त मजबूत काँच लगा दिया, जो उस मछली के तीव्र प्रहार से ना टूट सके। इस प्रकार टैंक दो भागों में विभाजित हो गया। प्रथम वह हिस्सा, जिस तरफ शार्क मछली थी और द्वितीय वह हिस्सा, जो खाली था अर्थात् जिसमें सिर्फ पानी था, मछलियाँ नहीं। अब उस वैज्ञानिक ने बिना मछलियों वाल हिस्से में कुछ छोटी–छोटी मछलियाँ डालीं। भूखी शार्क मछली अब उन छोटी–छोटी मछलियों को खाने के लिए उन पर झपटती, परंतु बीच में मजबूत काँच की दीवार आ जाती और शार्क मछली अब छोटी–छोटी मछलियों को नहीं खा पा रही थी। उस शार्क मछली ने उन छोटी–छोटी मछलियों को खाने हेतु अनेक प्रयास किए, परंतु हर बार उसके बीच में काँच की मजबूत दीवार आ जाती और वह शार्क मछली उन छोटी–छोटी मछलियों का खा नहीं पाती। कुछ समय तक प्रयास करने के बाद शार्क ने उन मछलियों पर झपटना छोड़ दिया। वह उनकी तरफ ध्यान देना ही छोड़ दिया। कुछ दिन बाद वैज्ञानिक ने वह काँच की दीवार हटा दी। अब शार्क मछली और अन्य मछलियाँ एकदम नजदीक थे। छोटी मछलियाँ शार्क के निकट तैर रही थीं। लेकिन शार्क मछली अब उन पर झपट नहीं रही थी। वह अपने मन में पक्की मानसिकता बना चुकी थी कि मैं इन्हें नहीं खा सकती, अतः मुझे इन्हें मारने का निरर्थक प्रयास नहीं करना चाहिए। व्यक्ति को अपनी मानसिकता में बदलाव लाना चाहिए। हर बार यह जरूरी नहीं कि सफलता प्रथम प्रयास में ही मिल जाए। परिस्थितियाँ कितनी ही विपरीत हों, किसी भी राह पर आप चल रहें हों, साधन कम हों, लक्ष्य ऊँचा हो, चिंताएँ आपको गर्त में धकेल रही हों, तब आप अगर थोड़ा आराम करना चाहो, तो आराम जरूर कर लो, लेकिन अपने प्रयासों को कभी मत छोड़ो, कभी भी हथियार मत डालो, अर्थात् हार मत मानो। विजयश्री एक दिन जरूर मिलेगी।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

बोर्ड पर लिखा सदवाक्य था – उन्हें मत सराहो जिन्होंने अनीति से पैसा कमाया है। कैलाश ने हँस कर कहा –अभी आप अस्पताल में पड़े हो, मसाण्या वैराग जाग रहा है, वापस काम पर लौटोगे तो वही करने लगोगे। उस व्यक्ति ने कैलाश को विश्वास दिलाया कि वह बदल कर रहेगा और उससे मिलता भी रहेगा।

बाद में कैलाश ने पता किया तो वास्तव में उस ठेकेदार के जीवन में बदलाव आ गया था। उसके आसपास के लोग इस परिवर्तन से आश्चर्यचकित भी थे पर इसका कारण किसी को पता नहीं था। इस घटना से कैलाश का उत्साह दुगुना हो गया। अब उसने मथुरा से कुछ छोटे आकार के स्टीकर मंगवा लिये जिन पर लिखा होता – हँसते रहो, कीप स्माईलिंग। ये स्टीकर वो अपनी जेब में रखता, जहां कहीं जाता, वहां पूछ कर चिपका देता, कोई मना भी नहीं करता।

इन चीजों से कैलाश की व्यस्तता बढ गई। व्यस्त रहो, मस्त रहो और स्वस्थ रहो उसके जीवन का अंग बन गया। एक बार फिर वह कुछ बोर्ड लगाने अस्पताल गया तो वहां अपने पड़ोस की एक महिला को भर्ती पाया। उससे हाल चाल पूछा तो उसने बताया कि उसे खून की जरूरत है, डाक्टर कह रहे हैं कि एक बोतल खून नहीं चढाया तो मैं मर जाउंगी। मुझे कोई खून देने वाला भी नहीं, अब मैं क्या करूं, कहां से खून लाउं, कहते कहते महिला रोने लगी।

उसे देख कैलाश का मन पसीज गया। उसने महिला को चुप कराते हुए कहा – रोओ मत बाई, तुम्हें खून मैं दूंगा। उसकी बात सुन महिला चुप होने की बजाय और जोरों से रोने लगी। कैलाश महिला को सांत्वना दे डाक्टर के पास गया और कहा कि वह खून देने को तैयार है। उस समय शायद अस्पताल में ब्लड बेंक जैसी कोई व्यवस्था भी नहीं थी।

डाक्टर ने कैलाश को थोड़ी देर बाहर बैठने को कहा तो वह एक बेन्च पर प्रतीक्षा करने लगा। एक घन्टा, दो घन्टे में परिवर्तित हो गया, डाक्टर का बाहर आने का नाम ही नहीं। कैलाश का धैर्य जवाब दे चुका था, वह तुनक कर डाक्टर के पास गया और जोर जोर से बोलने लगा कि अभी तक तो आप महिला से खून लाने की जल्दी कर रहे थे, अब मैं खून देने को तैयार हूं तो आप देरी क्यूं कर रहे हो ? कैलाश के तेज स्वरों से डाक्टर सहम गया, वह गिड़गिड़ा कर बोला कि उसे खून लेना नहीं आता, बड़े डॉक्टर साहब आयेंगे तभी खून लिया जायगा।

अस्पताल की ऐसी दयनीय स्थिति देख कैलाश को बहुत दुख हुआ। उसने मन ही मन ठान लिया कि वह आगे से अस्पताल में भी कुछ समय व्यतीत करेगा। आधे घन्टे बाद बड़े डॉक्टर आये तो उसका खून लिया गया।

अंश - 036

काईन हाउस में हरा चारा वितरण

मानव कमल कैलाश सेवा संस्थान द्वारा गुरुवार को नगर निगम के काईन हाउस में गो–वंश के सेवार्थ हरा चारा वितरण शिविर आयोजित हुआ। संस्था के मैनेजिंग चेयरमैन कैलाश जी 'मानव' ने बताया कि सह–संस्थापिका कमलादेवी जी अग्रवाल के नेतृत्व में आवारा और बीमार गायों को 200 पुली हरा रचका डाला गया।

काईन हाउस प्रभारी उमाशंकर जी ने संस्थान के गो–सेवा शिविर और मानवीय कार्यों के लिए आभार जताया। इस मौके पर कुलदीप सिंह जी, महिम जी जैन, शीतल जी अग्रवाल, राज कुमार जी, पवन जी शर्मा, सुकान्त जी मोहान्ती व राजेन्द्र जी वैष्णव ने सेवाएं दी।

बच्चों की सेहत पर ध्यान दें

बदलते मौसम के कारण बच्चों की परेशानियां बढ़ गई है। उनमें बुखार, निमोनिया, दस्त आदि की आशंका भी बढ़ गई है। चूंकि अब सर्दी के जाने और गर्मी के आगमन का समय है, अतः इस समय मच्छरों की संख्या भी बढ़ रही है। कुछ प्रभावी तरीकों से बच्चों को बुखार जैसी किसी भी आशंका से बचा सकते हैं।

इन बीमारियों की आशंका

बदलते मौसम में बच्चों को मच्छरजनित बीमारियों की आशंका सबसे अधिक होती है। मलेरियां व डेंगू जैसी बीमारियों के साथ ही पानी से सम्बन्धित रोग जैसे टाइफाइड, डायरिया और पीलियां भी इस मौसम में बच्चों को अधिक परेशान करते हैं। पानी की कमी से बच्चों में उल्टी–दस्त जैसी परे ाानियां बढ़ जाती है। ऐसे में बच्चों को दाल, दलिया, खिचड़ी, रोटी–सब्जी, दूध, फल, सूजी का हलवा, खीर जैसी चीजों खाने में दें।

एक साल से बड़े बच्चों की डाइट व्यस्क से आधी यानी लगभग 1100 कैलोरी होती है। बच्चों को हर थोड़ी–थोड़ी देर में कुछ खिलाते रहें।

टीके की अनदेखी न करें

टीके बच्चों का हर तरह के संक्रमण से बचाव करते है। इनसे उनकी इम्युनिटी बढ़ती है। यह बदलते मौसम में भी सुरक्षा देते है। इसलिए समय पर टीके लगवाते रहें।

ये बातें रखें ध्यान

- बच्चों को थोड़ा–थोड़ा करके कई बार खिलाएं। फाइबर डाइट दें।
- नारियल का पानी और ताजा फल भी डाइट में शामिल करें।
- हल्का भोजन लें।
- तेज धूप में बाहर न निकलने दें।
- साफ व ताजा पानी पिलाएं।
- बाजार की चीजें न खाएं।
- बोतल में दूध न पिलाएं।
- एकदम से सर्दी के कपड़े न छोड़े।
- मास्क का प्रयोग जरूर करें।
- बच्चों को हल्के व ढीले कपड़े ही पहनने को दें।
- तेज मसालेदार या तली–भुनी चीजें ज्यादा न दें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

यही सत्य है। अपने को साधना करनी है। विकारों को पूर्ण रूप से हटाने की। ज्यों–ज्यों क्षमता आती जायेगी, त्यों–त्यों विकार हटता जायेगा। संतोष बढ़ता जायेगा, आनन्द होता जायेगा, प्रज्ञा जागृत होती जायेगी। अपने पराये का भेद मिटता जायेगा। अपने में राम दिखता जायेगा, और भगवान की कृपा से 1988 के अगस्त महीने से अक्टूबर महीने तक भगवान ने जो काम करवाया। कहते हैं द्वादश ज्योतिर्लिंग ओंकारेश्वर जी, एक ज्योतिर्लिंग पर पिताजी बहुत पधारा करते थे। पिताजी स्नान करते करते थोड़े आगे चले गये।

माताजी किनारे पर खड़ी, माताजी देखे जा रही हैं, पिताजी आगे बहे जा रहे हैं। बीच में नर्मदा नदी में एक भंवर माता जी को दिखा। माताजी को लगा, कहीं ये पिताजी भंवर में नहीं पधार जाये। माताजी जोर से चिल्लाई और उसके बाद आवाज बंद हो गयी, अचानक एक नाव उधर से जा रही थी।

नाव पास में ले जाकर पिताजी को जोर से खींच कर नाव पर बैठा दिया, पिताजी बच गये। ये बचाने वाले परमात्मा। किसी किसी के सात साल की उम्र में ही माताजी –पिताजी चले जाते हैं। ऐसे मेरे पिताजी मदन लाल जी अग्रवाल साहब और बड़े पिताजी ताऊ जी साहब जिनको भाया जी बोला करते थे। देवीलाल जी अग्रवाल साहब के माताजी–पिताजी छः सात साल की उम्र में स्वर्गवास को प्राप्त हो गये। फिर भी उनका जीवन कितना अच्छा रहा? लाला, बाबू, ये नाम जो लोकेश जी बोले जा रहे हैं, वो तारीख भी परमात्मा के और साधन भी परमात्मा के :–

पानरवा दिनांक 14.08.1988 रोगी सेवा 688 अन्य सेवा 2123

झाड़ोल दिनांक 21.08.1988 रोगी सेवा 414, अन्य 1123

पालियाखेड़ा दिनांक 28.08.1988 रोगी सेवा 318, अन्य सेवा 1150

कालीवास दिनांक 04.09.1988 रोगी सेवा 270, अन्य सेवा 1183

वाडाफला दिनांक 11.09.1988 रोगी सेवा 514, अन्य सेवा 1823

कात्याफला दिनांक 18.09.1988 रोगी सेवा 413, अन्य सेवा 1650

गोरियाहरा दिनांक 25.09.1988 रोगी सेवा 300, अन्य सेवा 1223

सेवा ईश्वरीय उपहार– 389 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023